International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उषा देवी मित्रा के उपन्यास 'जीवन की मुस्कान' में वेश्या समस्या

अन्नु
शोधार्थी– पी.एच.डी. (हिन्दी–विभाग)
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

वेश्या समस्या समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है। समाज का यह वर्ग हमेशा से ही वेश्याओं को निरादर की दृष्टि से देखा जाता है। वात्स्यायन ने कामसूत्र में ऐसी स्त्रियों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखा था कि ''निम्न कोटि की औरत से प्रेम करना या किसी विध्वा से प्रेम करना, जो संयम का जीवन निर्वाह न कर सके, न तो शिष्ट ही समझा जाता था और न ही वर्जित ही था, क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य काम आनन्द था। इस प्रकार की स्त्रियां पत्नी के पद पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती थी। धार्मिक उत्सवों में भाग लेने का अधिकार नहीं था और न उनकी सन्तान को ही समाज में सम्मानित समझा जाता था।''

महात्मा गांधी ने भी इन पतिता व अभागिन बहनों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– ''यह बड़े दुख और अपमान की बात है कि मनुष्य की वासना को तृप्ति के लिए स्त्रियों को अपनी इज्जत बेचनी पड़े। पुरूष ने; जो नियामक है स्त्रियों का जो अपमान किया है, उसके लिए उसको कठिन दण्ड भुगतान पड़ेगा। जब स्त्री अपनी पूरी शक्ति से पुरूष के जाल से बचकर उसके नियमों और संस्थाओं के विरूद्ध आन्दोलन करती है, तो हिंसात्मक ही क्यों न हो कम प्रभावशाली नहीं होता। भारतवर्ष के पुरूषों को चाहिए उन हजारों स्त्रियों के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करें, जो इसकी नियम विरूद्ध अनैतिक वासना के लिए इज्जत बेचती हैं''

इस समस्या के आर्थिक पहलू का विश्लेषण करते हुए राहलु संस्कृतयायन ने भी यही मत व्यक्त किया है:– ''वेश्यावृति की जड़ भूख है, इससे संदेह की गुंजाइश नहीं। इसी भूख से बचने के लिए पुराने समाज में स्त्री को अपना शरीर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

बेचना पड़ता था और उसी के लिए पूंजीवादी समाज आज उसकी खरीद फरोख्त कर रहा है। जब तक पूंजीकरण है, यह क्रय–विक्रय बन्द नहीं होगा।''

हिन्दी उपन्यासकारों ने समय–समय पर सामाजिक बुराईयों के विरोध में अपनी लेखनी स्वतंत्रतापूर्वक चलाई। कभी–कभी वे आदर्शवाद का दामन पकड़कर यथार्थवाद से दूर चले गए। आदर्शो के धरातल पर ही उन्होंने अपने आपको खड़ा कर दिया। यदि हिन्दी उपन्यासकार यथार्थवाद का दामन पकड़कर चलते और सामाजिक संकीर्ण मान्यताओं में नवीन स्वस्थ मूल्य स्थापित करते तो हिन्दी उपन्यासकारों के समाधान माननीय होते।

एक नारी वेश्या बनने के लिए लालायित नहीं रहती है, बल्कि इसके पीछे कई ऐसे कारण होते हैं, कि उसे इस नरक में अपने आपको झोंकना मजबूरन पड़ता है।'' आप लोग यह क्यों भूल जाते हैं कि हरेक बुराई मजबरी से होती है। चोर इसलिए चोरी नहीं करता कि चोरी में उसे विशेष आनन्द आता है, बल्कि केवल इसलिए कि जरूरत उसे मजबूर करती है। हां, वह जरूरत वास्तविक है या काल्पनिक इसमें मतभेद हो सकता है। स्त्री के लिए मौके जाते समय कोई गहना बनवाना एक आदमी के लिए जरूरी हो सकता है, दूसरे के लिए गैर जरूरी। क्षुध से व्यतीत होकर एक आदमी अपना ईमान खो सकता है, दूसरा मर जाएगा, पर किसी के सामने हाथ न फैलाएगा, पर प्रकृति का यह नियम आप जैसे विद्धानों को न भूलना चाहिए कि जीवन की लालसा प्रत्येक प्राणिमात्र में व्यापक है। जिन्दा रहने के लिए आदमी सब कुछ कर सकता है। जिन्दा रहना, जितना ही कठिन होग, बुराईयां भी उसी मात्रा में बढ़ेगी। जितना ही आसान होगा। उतनी ही बुराईया कम होगी। हमारा यह पहला सिद्धांत होना चाहिए कि जिन्दा रहना हर एक के लिए सुलभ हो।

''वेश्यावृति के प्रति समाज का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण नहीं था। वेश्याएं घृणा की दृष्टि से देखी जाती थी और सुधार का मुख्य विषय यही था कि किस प्रकार नवयुवकों को उनके घातक आकर्षण से मुक्त कराया जाए।''

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

वेश्या समस्या को दूर करने के लिए समय–समय पर अनेक प्रयास किए गए किन्तु हमारे समाज की संकीर्ण और रूढ़िग्रस्त परम्पराएं इन समाधानों को कहां तक कार्यन्वित कर सकती है। यह प्रश्न विचारणीय है। ''यदि वेश्याओं के प्रति भी यह भाव रख सके कि वे हमारी अपनी ही भूलों के कारण पतित हुई हमारी ही माताएं आर बहने हैं, जो वेश्या बन गई है तो कभी समाज में यह कोढ़ जिन्दा नहीं रह सकता।''

महात्मा गांधी ने भी इस दिशा में जो समाधान प्रस्तुत किए हैं वे बहुत ही महत्वपूर्ण है। वे कहते हैं – ''इसके पहले कि उन्हें इससे छुटकारा मिलें, दो शर्तों को पूरा करना होगा। हम पुरूषों को अपनी वासना पर नियंत्रण करना चाहिए और इन स्त्रियों को रोजगार दिया जाए ताकि ये सम्मानपूर्वक अपनी रोटी कमा सकें। यदि असहयोग आन्दोलन हमारी वासनाओं को नहीं रोकता और हमें पवित्र नहीं बनाता तो यह कुछ भी नहीं है और कातने–बुनने के अलावा एसा कोई पेशा नहीं जिसे सब अपना सकें। इन बहनों में से बहुतों को विवाह की बात भी सोचनी चाहिए। गांधी जी समस्या के मूल में उतरकर समस्या का निवारण करते थे। उन्होंने समस्या के मूल कारण आर्थिक पराधीनता और पुरूष की वासनामय दृष्टि के उन्मूलन पर ही विशेष जोर दिया है जो बड़ा ही उचित है। श्यामकुमारी नेहरू ने भी वेश्यावृति का मुख्य कारण आर्थिक पराधीनता को ही माना है। संसार के अन्य देशों पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जहां पर स्त्रियों ने पुरूषों के साथ–साथ आर्थिक समस्याओं की पूर्ति के लिए कदम बढ़ाया वहां उनको समाज में अच्छा स्थान मिला।

इस प्रकार वेश्या रूप नारी से जुड़ी समस्या है जो हर युग में विद्यमान रहती है। परिणामस्वरूप हर युग के साहित्य में साहित्कारों ने इस समस्या का जिक्र किसी न किसी रूप में होता है। उषा जी ने उपन्यास 'जीवन की मुस्कान में 'पुरबी' के माध्यम से वेश्याओं द्वारा भोगी जाने वाली तकलीफों का मार्मिक चित्रण किया है। इसमें दो राय नहीं कि प्रायः कोई भी स्त्री अपनी खुशी से भोग्या रूप को नहीं अपनाती, इसके पीछे पुरूषों की वासनामय दृष्टि और नारी की आर्थिक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

पराधीनता ही मुख्य कारण रहे हैं। पूरबी का वेश्या बनाना इसी आर्थिक पराधीनता का प्रतीक है। पूरबी शहर की प्रसिद्ध वेश्या है, वह अपने गान से श्रोताओं को मंत्रामुग्ध कर देती है, परन्तु पृथीश के अनुसार वेश्या के नाज नखरे संगीत को निम्न स्तर पर ले जाते हैं। इसी वजह से वह पूरबी पर कटाक्ष करता है– ''क्या मैं पूछ सकता हूं, संगीतज्ञ बाई जी से कि प्रेम के समान गम्भीरता में श्रोता को ओत–प्रोत न कर ठुमरी की चंचलता, चपलता में, अस्थिरता और बाहरी सौन्दर्य में उसे अद्यः पतन के निम्न स्तर में क्यों उतारती लिये जा रही हैं?''

पूरबी के सामने परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि उसे हालात से समझौता कर वेश्यावृति अपनानी पड़ती है। ''पूरबी का इतिहास देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने स्वयं का समाज द्वारा निषिद्ध वातावरण में पाया, उसके उपरान्त अन्धे माता–पिता, विध्वा बहिनें, सभी का दायित्व उस पर था। वह कमलेश को भी इस प्रश्न पर स्पष्टीकरण देती है। ''मैं जानबूझकर नहीं आई डाक्टर। मैने अपने आपको यही पाया ओर झांका मैने तो देखा अपने को पृथ्वी की धूल कीचड़ में सना हुआ पाया। वहां से उठने का भी तो ऐसा कोई उपाय नहीं था। एक और मैं लुटी हुई नारी, दूसरी ओर असहाय गृहस्थी, मेरी क्वांरी और विध्वा बहनें, उनके बच्चे, अन्धे बाप कम कर देती हूं, छिप कर घर भी चली जाती हैं''

पूरबी को अपनी सीमाएं पता हैं वह जानती है कि समाज में उसकी छवि किस प्रकार से प्रचारित है। इसलिए वह पृथीश को भोजन का निमंत्रण देने से पहले उससे पूछना आवश्यक समझती ह। – ''मेरे हाथ का भोजन करेंगे आप।''

''पूरबी का जन्म वेश्यालय में होता है और वहां पर उसको वेश्या बनाकर रहना पड़ता है। उसका मन बड़ा भावुक और कोमल है। वह दिन रात रोया करती है। किन्तु उसे दूसरा कोई उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता। इसी कारण उसकी विवाहित छोटी बहिन को भी उसका पति त्याग देता है। पूरबी उदास होकर अपने अभिशप्त जीवन की कहानी, पृथीश से कहती है।'' ''मेरे लिए तो उस बेचारी को बच्चों सहित पति ने त्याग दिया, उसे पता चल गया कि इसकी

बहन वेश्या है। और मेरे ही कारण क्वारी है। वेश्या की बहिन को कौन ब्याहने लगा।

भरी महपिफल में रहते हुए भी पूरबी हृदय से एकान्तिक जीवन व्यतीत करती है। वह पृथीश को हृदय से चाहती है और जब पृथीश के साथ दुर्घटना होती है तो वह अपनी महपिफल का सारा कार्य छोड़कर पृथीश की सेवा में लग जाती है। जब उसके घर आए व्यक्तियों में से कोइ एक उससे पूछता है कि बाई जी ये कौन है तो पूरबी कहती है– ''सब कोई'' – वह अनायास कह उठी – सब कोई। उस छोटे उत्तर को सुनकर सेठ जी के साथ पृथीश भी चौंका। पृथीश को भी खराब लगा। एक वेश्या दुनिया के सामने सब कोई होने का दावा लेकर खड़ी हो जाएगी अन्धेर ही तो है। और वह एक भद्र होकर ऐसी बातों को सह नहीं सकता, प्रतिवाद करने के लिए उसका जी चाहने लगा।'' पृथीश की सेवा में मग्न पूरबी, अन्य लोगों को घर जाने के लिए कहती है तो सेठ जी से सब्र का बाण जाता रहता है। वह अर्नगल प्रलाप करता है। ''वाह! खूब कही, मुझ जैसा पैसा खर्च करने वाला है ही कौन? रंडी के घर आना भी एक जुल्म है, ऊपर से मिजाज बदलती है।'' पूरबी शान्त स्वर में उत्तर देती है– ''देह मेरी अवश्य बिकी है सेठ जी, दुनिया से यह बात छिपी नहीं है परन्तु मेरी आत्मा मेरी ही रहेगी, उसे मै बेच नहीं सकती।'' यह सब देखकर पृथीश का हृदय करूणा से भर जाता और वह कह उठता है – ''बड़ा दुखी जीवन है, पूरबी तुम्हारा।''

परन्तु जैसे ही उसे पता चलता है कमलेश डाक्टर के रूप में उसका इलाज करने के लिए बुलाया गया है तो वह एक पल भी पूरबी के घर नहीं रूकता और कमलेश को अपनी जांच गाड़ी में ही करने को कहता है तो पूरबी सोचने पर मजबूर हो जाती है। ''अभी–अभी जो व्यक्ति उससे ऐसा सदय व्यवहार कर रहा था, लोकनेत्र के बाहर जिसने अनायास उसका अपवित्र हाथ पकड़ लेने में भी द्विध न की थी, किस परिस्थिति में पकड़क रवह अभी–अभी उसी जीवनदात्री के घर की वायु तक को अपवित्र कह सका, इस बात को विचार कर पूरबी मलिन हंसी। पूरबी को देखकर यही लगता था कि पृथीश के इस बर्ताव के लिए उस न

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

खेद था, न दुख वरन् जो कुछ था यदि उसे पृथीश समझ सकता तो शायद वह अपना सिर पीट लेता पूरबी के मस्तक के कील ठोक देता।'' यहां समाज की उस संकीर्ण मानसिकता का प्रतिपादन हुआ है जो सैद्धांतिक व व्यवहारिक रूप से समान नहीं है। पूरबी वेश्या भले ही हो पर वह भी सामान्य नारी की भांति उत्पन्न हुई है। उसमें भी स्त्रियोचित गुणों का समावेशन है, पर समाज की संकीर्ण मानसिकात उसे सिर्फ उपभोग की एक सामग्री मात्र, रंग–रलियां मनाने का एक साधन मात्र मानती हैं। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि उसमें एक निष्ठ प्रेम करने की भावना है ही नहीं। इसलिए जब पूरबी पृथीश को भोजन पर निमंत्रण देती है तो, निलाम्बर उससे पूछता है कि कल पृथीश को भोजन कराकर उसे क्या मिलेगा तो वह कहती है– ''कल मुझे मिलेगा, थोड़ा सा सन्तोष, वहीं सन्तोष जो कि एक के तृप्ति पूर्ण भोजन से नारी को मिला करता है।'' पूरबी पृथीश की व्यवहारिक व सैद्वान्तिक वैचारिक भिन्नता को विश्लेषित करती है। ''भूरू, का पुरूष, इसी हृदय के बल पर तुम वीर बनना चाहते हो? ठुमरी और ख्याल की आलोचना करते हो? यदि तुम्हारे वीरत्व की सभ्यता का चरम उद्देश्य सार्थकर्ता, मनुष्त्व को पशुत्व में परिणत करना ही हो तो, उस सभ्यता, उस वीरत्व को मैं दूर से ही नमस्कार करती हूं। उससे वेश्या का जीवन दस गुना अच्छा है।''

पूरबी में भी नारी सुलभ गुणों का समावेश है। नारी सुलभ गुणों में से एक गुण है– मात्त्व। इसी मात्त्व के न मिलने के कारण पूरबी कभी–कभी अपने आपको अभिशपत समझती मै और कमलेश से वेश्या का मनोयोग, पीड़ा के स्वर सुनने का कहती है। ''यदि मनोयोग से सुन पाते तो कि वेश्या जीवन का इच्छित मातृत्व किस हाहाकार से, आकुल वेदना, निष्फल क्रोध से सदा सिर पीटा करता है, मां बनने के लिए मैं एक दिन दुनिया में आइ थी और बन गई राक्षसी। और अपनी ही अनिच्छा से। मां होने के लिए मेरे मन की भूखी नार कभी–कभी कितनी आतु हो जाती है। वेश्या की सन्तान भी तो वेश्या की पंक्ति में बैठती है।''

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

जीवन के अन्तिम क्षणों में पूरबी अकेली मृत्युशैया पर लेटी हुई थी। जिस घर में महफिल सजी रहती थी। वहां पर सन्नाटा पसरा हुआ था। पूरबी की देहरी में हंसी का कोलाहल मुर्च्छातर हो रहा था। उच्छृखंल आमोद ने समाधि ले ली थी। पायल की झंकार निद्रालु सी थी। दास–दासो उदास थे। वायु के कम्पन में शराब का रंगीला नशा नहीं गहरी उदासी थी। और उस उदास वायु में पलंग से लगकर पड़ी थी मुट्ठी भर फूल से पूरबी।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

क्र उषा देवी मित्रा, 'जीवन की मुस्कान',सरस्वती प्रैस बनारस, प्र.स.–1939

सहायक ग्रन्थ

- क्र वात्स्यान, कामसूत्र, पृ. न. 601
- क्र महात्मा गांधी, महिलाओं से, बनारस, पृ.सं. 1949
- क्र राहुल सांस्कृत्यान, मानव समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं. 1977, पृ. न. 206
- क्र डा. गीता लाल, प्रेमचन्द का नारी चित्रण, पृ.न. 156
- क्र बिन्दु अग्रवाल, हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण, राधकृष्ण प्रकाशन, प्र. सं. 1968, पृ.न. 1081
- क्र उषा देवी मित्रा, जीवन की मुस्कान पृ. न. 24
- क्र वहीं, पृ. न. 206
- क्र वहीं, पृ. न. 120
- क्र वहीं, पृ. न. 88

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

क्र वहीं, पृ. न. 89

क्र वहीं, पृ. न. 90

क्र वहीं, पृ. न. 91

क्र वहीं, पृ. न. 204